पुरस्कृत हुईं दीदियां, बेहतर कार्य करने की मिली प्रेरणा

महिला शक्ति से ही नये झारखंड का निर्माण

राजधानी रांची के धुर्वा स्थित नेहरु स्टेडियम में पिछले पांच मई को राष्ट्रीय आजीविका एवं कौशल विकास मेले के आयोजन कार्यक्रम में झारखंड समेत देशभर की कई दीदियों को सम्मानित किया गया. ये दीदियां अपने क्षेत्र में अपने काम से पहचान बनायी और गरीबी से खुद को बाहर निकलकर दूसरी महिलाओं को इसके लिए प्रेरित किया. इस दौरान झारखंड के सभी जिलों से करीब 25 हजार सखी मंडल की दीदियां उपस्थित थीं. इस आयोजन के जरिए दीदियों को नये झारखंड के निर्माण के लिए बेहतर कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया. इस दौरान दीदियों ने अपनी कहानी बताने से भी नहीं हिचकिचायी. आइए जानते हैं, दीदियों की कहानी, उन्हीं की जुबानी.

1 आर्थिक स्थिति हुई मजबूत : सोनामती उरांव

खूंटी जिला अंतर्गत फुदी पंचायत स्थित कालामाटी गांव की सोनामती उरांव कहती हैं कि सखी मंडल से

उनकी जिंदगी बदल गयी है. वर्ष 2015 में कालामाटी ग्राम संगठन से जुड़ीं. बतौर बुककीपर काम शुरू किया. इसके एवज में उन्हें 1500 रुपये महीने में मिलने लगे. सक्रिय महिला सदस्य होने के नाते वह महिला समूह की बैठकों में जाने लगीं और बैठक आयोजित कराने लगीं. इसके बाद 10 रुपये से बचत करना शुरू किया. इससे बचत करने की आदत हुई. समूह में लेन-देन शुरू हुआ. अप्रैल 2018 में उत्पादकता समूह बनायीं. इसमें 35 महिला सदस्य हैं. अब इमली का व्यवसाय कर रही हैं. इसे बेचने के लिए ग्राहक सेवा केंद्र बनाया गया है, ताकि इमली की उचित कीमत मिल सके. आज 42 रुपये किलो इमली की बिक्री हो रही है. इसी का नतीजा है कि वह 12 हजार रुपये महीना आमदनी कर ले रही हैं.

2 सखी मंडल से जीवन में आया समृद्धि : अमृता देवी

गुमला जिले के घाघरा प्रखंड की आदर पंचायत के बड़ा अजियातू गांव की अमृता देवी कहती हैं कि

सखी मंडल से उनके जीवन में समृद्धि आयी है. पहले वह खेती-बारी करती थीं. सखी मंडल से वह अप्रैल 2017 में जुड़ीं. बतौर बीसी सखी काम करने लगीं. पिछले तीन महीने में वह 50 लाख रुपये का ट्रांजेक्शन की हैं. पिछले एक साल में एक करोड़ रुपये का ट्रांजेक्शन कर चुकी हैं. गांव में कुल 1200 घर है, लेकिन बैंक 15 किलोमीटर दूर है. अब उन्हें घर बैठे बैंकिंग सेवा मिल रही है. 800 मनरेगा मजदूरों का भुगतान कर चुकी हैं. 1550 लोगों का खाता खोल चुकी हैं. 1500 एटीएम का वितरण कर चुकी हैं. 300 को वृद्धा पेंशन की राशि दिला चुकी हैं. इस दौरान एक दुकान खोली हैं. इसमें फोटो कॉपी की मशीन व लैपटॉप रखती हैं. इस तरह उन्हें 9-10 हजार रुपये महीने में आमदनी हो रही है.

3 पशु सखी से बदली जिंदगी : रंजना

महाराष्ट्र के घटंगी की पशु सखी रंजना लक्ष्मी माता ग्राम संगठन से जुड़ीं हैं. वर्ष 2015 में इनका चयन

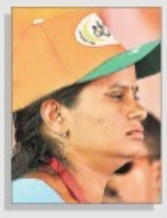

पशु सखी के रूप में हुआ. प्रशिक्षण के बाद सात हजार रुपये ऋण लेकर वह बकरी खरीदीं. इससे उनके जीवन में काफी बदलाव आया. वह बताती हैं कि गांव में 130 बकरी हैं. टीकाकरण पर जोर देने के कारण मृत्यु दर में कमी आयी. पहले पशुपालन से जो लोग इनकार करते थे, आज वह उन्हें सहयोग करते हैं. छह हजार रुपये महीने की आमदनी हो रही है.

4 मजदूरी करने वाली आज बनीं मालकिन : ममता

मध्य प्रदेश के सनगांव की ममता बघेल मास्टर बुककीपर हैं. समूह से वर्ष 2015 में जुड़ीं. बुककीपर

का प्रशिक्षण मिला. अब वह दूसरी दीदियों को प्रशिक्षित करती हैं. वर्ष 2016 में सीआरपीइपी बनीं. इस दौरान व्यवसाय की हर परिस्थितियों से अवगत हुईं. 50 दीदियों को व्यवसाय से जोड़ चुकी हैं. साबुन निर्माण, अगरबती, दोना-पत्ता निर्माण में दीदियों को लगायीं. कभी मजदूरी करने वाली दीदियां आज मालकिन बन गयी हैं. वह सात हजार रुपये महीना कमा रही हैं.

5 प्रशिक्षण से बदल गयी जिंदगी : कुमारी सुभ्रर्षी सामंत्रे

ओड़िशा की रहने वाली कुमारी सुभ्रर्षी सामंत्रे 12वीं पास हैं. कहती हैं कि डीडीजीयूवाइके से प्रशिक्षण के बाद उनकी जिंदगी बदल गयी. रिटेल का प्रशिक्षण लेने के बाद चेन्नई की नेशनल लेवल कॉफी प्रतियोगिता में शामिल हुईं. आज इंटरनेशनल कंपनी में एचआर का काम कर रही हूं. हर माह 42 हजार रुपये सैलरी मिल रही है. इससे उन्होंने अपने माता-पिता का सपना भी पूरा किया.

6 जीविका से जुड़ कर बदल गयी जिंदगी : अमृता देवी

बिहार के खगड़िया की रहने वाली अमृता देवी कहती हैं कि जीविका से

उनका जीवन काफी बदल गया. वह जीविका महिला कृषक उत्पादन कंपनी लिमिटेड से वर्ष 2008 में जुड़ीं. धीरे-धीरे आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने लगीं. समूह से लोन लेकर गाय खरीदीं और एक दुकान खोलीं. इसके बाद वह आठ लाख रुपये का बड़ा ऋण लिया. आज 15 हजार रुपये महीने की कमाई कर रही हैं. 2018 में एक हजार मीट्रिक टन मक्का बीज खरीदने का लक्ष्य है.

7 मोबाइल दुकान से हो रही अच्छी आमदनी : गौरव

लोहरदगा के बड़कीचांपी के रहने वाले गौरव कुमार तिवारी कहते हैं कि एक वक्त

था, जब रोजगार के लिए भटक रहे थे, लेकिन आज कौशल विकास के तहत प्रशिक्षण के कारण वह 25 हजार रुपये महीना कमा रहे हैं. शुरुआत में उन्होंने मोबाइल बनाने का तकनीकी प्रशिक्षण लिया. इसके बाद दुकान खोलने का निर्णय लिया. बैंक से लोन लेकर टेलीकॉम नाम की दुकान खोली. एक युवा को रोजगार भी दिया. इससे सब कुछ बदल गया है.

8 रोजगार के साथ सपना हुआ पूरा : अनंत बेरागी

असम के अनंत बेरागी ने 12वीं तक पढ़ाई की है. वह बताते हैं कि प्रधानमंत्री

कौशल विकास योजना से उनके जीवन में काफी बदलाव आया है. वह कंप्यूटर सीखना चाहते थे. प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत गुवाहटी में ओराइन एजुटेक में तीन महीने का कंप्यूटर का प्रशिक्षण लिया. इसके बाद शुरुआत के दो माह तक सात हजार रुपये सैलरी मिली. बाद में काम को देखते हुए अब उन्हें हर माह 16 हजार रुपये सैलरी मिल रही है.

9 कौशल विकास योजना ने बदली जिंदगी : शाहिदा

दिल्ली के मेहरौली की शाहिदा अहमद कस्टमर केयर एक्जीक्यूटिव हैं. पहले

उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी. इस कारण पढ़ाई छोड़नी पड़ी थी. पढ़ने और नौकरी करने वाले दोस्तों से दूरी बनाने लगी थीं. तभी प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना की जानकारी मिली. वह बताती हैं कि प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत ग्राहक सेवा अधिकारी का प्रशिक्षण लिया. आज हर माह 15 हजार रुपये की सैलरी मिल रही है.

बेहतर कार्य करनेवाले ग्राम संगठन पुरस्कृत

सीता जीविका महिला ग्राम संगठन	डोभी गया
रानी लक्ष्मीबाई ग्राम संगठन	बेलसरिया छत्तीसगढ़
सतरौंधी घरौंदा ग्राम संगठन	करनाल हरियाणा
कुलगो उत्तरी आजीविका ग्राम संगठन	गिरिडीह झारखंड
झांसी आजीविका ग्राम संगठन	कर्नाटक
रानी लक्ष्मीबाई ग्राम संगठन	गढ़चिरौली महाराष्ट्र
इंदिरा गांधी आंचलिक ग्राम संगठन	बालासोर ओड़िशा
पेटे ग्राम संगठन	कोहिमा नागालैंड
वनश्री ग्राम संगठन	जलपाइगुड़ी पश्चिम बंगाल